भिन्न-भिन्न फूलों का बना हुआ है। ये हार कैसे हो सकता है। एक हार मतलब एक रंग के फूल चाहिएं। एक समान नहीं बनाना है। एक बनाने की बात है। परन्तु हम लोग एक समान बनाने की दिशा में प्रयत्न करते हैं। पंडित जी कहते हैं कि एक जैसे होने की आवश्यकता नहीं। एक होने की आवश्यकता है। ये विविधता उसका भेद का कारण नहीं बनना चाहिए। लोगों ने इसको पृथकता माना। जो इसको पृथकता मानते हैं विविधता की वह एक विकृति है। बहुत कठोर शब्दों में पंडित जी ने कहा है कि इस विविधता को और भेद मानने वाले, अलग मानने वाले एक मानसिक विकृति के शिकार हैं। होना क्या चाहिए, विविधता में आनन्द लेना चाहिए। और इस दृष्टि से जब हम कहते हैं कि भारत सांस्कृतिक दृष्टि से एक है। उपर कई प्रकार की भिन्नताएं हो सकती हैं। भाषाएं अलग हो सकती हैं। हम अनुभव कर सकते हैं कि कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक चारों दिशाओं में घिरा हुआ ये जो अपना समाज है उस समाज की कई प्रकार की मान्यताएं हैं। एक जैसी नहीं हैं, भाषाएं एक नहीं है, वेष एक नहीं हैं, खान-पान की शैली एक नहीं है। परन्तु जीवन के मूल्य एक हैं। भारत के कहीं पर भी जायेंगे प्रामाणिकता जीवन का मूल्य है, परिश्रम जीवन का मूल्य है, नैतिकता जीवन का मूल्य है। अन्याय का विरोध करने वाले न्याय के पक्ष में खड़े रहने वाले इसको हमने मूल्य के रूप में स्वीकार किया है। इसी को सांस्कृतिक राष्ट्रवाद कहते हैं। यह हमारी सबकी एक है। और इसलिए विस्तार से इन सब बातों को पंडित जी ने हम सबके सामने रखा। इसको समझने की आवश्यकता है। और इसलिए आज अगर कोई कहता होगा कि भारत संघ राज्य है, हम कहते हैं कि राज्यों की व्यवस्था है, भारत सांस्कृतिक दृष्टि से एक राष्ट्र है। ये राष्ट्रवाद का मूल विचार इसको लेकर चले हुए हम लोग भारत को इस प्रकार से उपर दिखने वाले हाथों के आधार पर अलग-अलग स्थापित करने का प्रयास लोग कर रहे हैं। मैनें पहले ही कहा द्रविड़स्तान की मांग करते हैं, खालिस्तान की मांग करते हैं, नागालैण्ड की मांग करते हैं। ये बाहरी विविधता को देखकर हम अलग हैं इस प्रकार का भाव निर्माण करने का, बीज बोने का गलत काम करने वाली शक्तियां भारत के अन्दर सक्रिय होती रही हैं। ये सब प्रश्न सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के सामने चुनौती के रूप में खड़े होते हैं। इसको भी हमको समझने की आवश्यकता है। हम मानते हैं कि एक वृहद भारत में कई प्रकार के राष्ट्रवाद की चर्चा चली। कोई कहता है कि यूरोपीय राष्ट्रवाद है, कोई